मिशन लाइफ के अंतर्गत विश्व पर्यावरण दिवस-2023 के आयोजन की रिपोर्ट

Report on Celebration of World Environment Day-2023 #Mission LiFE

भा॰वा॰अ॰शि॰सं॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा # मिशन लाइफ के अंतर्गत 05 जून, 2023 "विश्व पर्यावरण दिवस" का आयोजन उत्तर पश्चिमी हिमालय वृक्ष वाटिका पॉटर हिल, शिमला में किया गया । मिशन लाइफ अभियान का उदेश्य पर्यावरण संरक्षण है, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति, अपनी जिम्मेदारी समझे और छोटे से लेकर बड़े-बड़े काम को पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए करने की अपील की गई है । सर्वप्रथम, **डॉ॰ संदीप शर्मा, निदेशक** ने # मिशन लाइफ की शपथ दिलाई । उन्होने कहा कि भारत के प्रधान मंत्री ने मिशन लाइफ' की शुरुआत की है, यह अभियान हर व्यक्ति से सीधे तौर पर जुड़ा है, अगर हम पर्यावरण बचाएंगे, तभी हम भी आगे बच पाएंगे । जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणामों को देखते हुए इस अभियान की शुरुआत की गई है । मिशन लाइफ न केवल पर्यावरण और जिंदगी बचाने पर केंद्रित है बल्कि इसका सीधा संबंध अर्थव्यवस्था से भी है । उन्होनें बताया कि इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस का **थीम 'प्लास्टिक प्रदूषण का समाधान'** है । अतः हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि हम व्यक्तिगत तौर पर प्रण ले कि पर्यावरण सरंक्षण के लिए जरूरी कदम उठाए । **डॉ॰ जगदीश सिंह,** वैज्ञानिक ने **'मिशन लाइफ'** के विभिन्न थीम के बारे मे बच्चों को जागरूक किया । उन्होने कहा कि पिछले एक महीने में संस्थान ने मिशन लाइफ के तहत पर्यावरण सरंक्षण संबन्धित जागरूकता के लगभग 300 कार्यक्रम किए है । हर एक इंसान को अपनी जिम्मेदारी समझने की अपील की गई । ट्रैफिक सिग्नल का उदाहरण ले, जिस वक्त ट्रैफिक रुका हो, उस समय गाड़ी को स्टार्ट रखने की जरूरत नहीं. इससे तेल की बचत के साथ पर्यावरण संरक्षण भी हो सकता है। मंहगे तेल और कार्बन उत्सर्जन के चलते अर्थव्यवस्था को गहरा धक्का लगता है । ट्रैफिक सिग्नल पर गाड़ी बंद रखने से अरबों रुपये की बचत हो सकती है साथ ही पर्यावरण में जहरीला धुआं जाने से बचेगा । **श्री वी॰के॰ जोशी,** सेवानिवृत आईएएस अधिकारी एवं मुख्य वक्ता ने कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण बहुत बड़ी समस्या है । हर नागरिक इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । हमे प्लास्टिक की थैली धड़ल्ले से इस्तेमाल करने की आदत सी लग गई है, जो कि हमारी प्रकृति में जहर के समान है, अगर प्लास्टिक छोड़ हम कपड़े के थैले का इस्तेमाल करें तो बड़े स्तर पर पर्यावरण को बचा सकते हैं तथा अपनी जिम्मेवारी का निर्वहन कर पर्यावरण सरंक्षण में योगदान दे सकते है । हर साल करीब 500 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्पादन हो रहा है। ग्रीनपीस संस्था के अनुसार वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक उत्पादन

अगले 10 से 15 वर्षों में दोगुना और 2050 तक तिगुना हो सकता है । संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने एक हालिया रिपोर्ट में कहा है कि प्लास्टिक संकट को दूर करने के लिए पहला कदम इसे कम करना है तथा 2040 में वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण को 80% तक कम किया जा सकता है, यदि देश प्लास्टिक की खपत और उत्पादन में व्यवस्थित परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध हों । **डॉ॰ वनीत जिशटू,** वैज्ञानिक ने बताया कि उनका संस्थान पर्यावरण सरंक्षण से संबन्धित लगातार प्रयासरत है । शहरी वानिकी के विकास को ध्यान में रखते हुये संस्थान ने पॉटर हिल शिमला में दो हेक्टेयर क्षेत्र में पश्चिमी हिमालय समशीतोष्ण वृक्ष वाटिका विकसित की है, जिसमे 130 नेटिव वन प्रजातियों को लगाई है । **डॉ॰ जोगिंदर सिंह**, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने बताया कि भारत सरकार ने जुलाई 2022 से सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक लगा दी है । उन्होने आगे बताया कि विद्यार्थियों के मन और मस्तिक में पर्यावरण के प्रति सकारतमक सोच ला कर अच्छे परिणाम सामने होंगे । इस अवसर पर स्कूली बच्चों में जागरूकता लाने के उदेश्य से उनके लिए नुक्कड़ नाटक, नारा लेखन, चित्रकला/पोस्टर मेकिंग एवं क्विज जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमे शिमला के पाँच पाठशालाओ क्रमश: राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ब्यूलिया, बालुगंज, समरहिल, फागली एवं बलदेया के 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया और नुक्कड़ नाटक, नारा लेखन एवं चित्रकला/पोस्टर के माध्यम से प्लास्टिक प्रदूषण से होने वाली समस्याओं को उजागर किया । विद्यार्थियों को सुंदर प्रस्तुति हेतु इनाम भी वितरित किए गए । इस अवसर पर संस्थान के अधिकारीयों/कर्मचारीयों, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों सहित लगभग 180 लोगो ने कार्यक्रम में भाग लिया ।

कार्यक्रम की झलकियाँ

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT
PLASTIC
POLLUTION

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT
PLASTIC
POLLUTION

WORLD
ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY

Mission LiFE

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT
PLASTIC
POLLUTION
RESEARCH INSTITUTE, SHIMLA
PRADESH FOREST DEPARTMENT

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT
PLASTIC
POLLUTION

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT
PLASTIC
POLLUTION
ICFRE-HIMALAYAN FOREST
WILDLIFE WING OF HIMACHAL

WORLD
ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY

ENVIRONMENT DAY

ENVIRONMENT DAY

ENVIRONMENT DAY

ENVIRONMENT DAY

WORLD
ENVIRONMENT DAY
BEAT
PLASTIC
POLLUTION
ICFRE-HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE, SHIMLA
WILDLIFE WING OF HIMACHAL PRADESH FOREST DEPARTMENT